INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. संगीता शराफ 1
सहायक प्राध्यापक,
स्कुल ऑफ एजूकेशन,
मैटस विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

डॉ. प्रज्ञा झा 2
सहायक प्राध्यापक,
स्कुल ऑफ एजूकेशन
मैटस विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांष

बालक की सर्वप्रथम पाठशाला उसका अपना घर होता है , एक बालक का चरित्र, बोलचाल और व्यवहार रहन सहन सभी अपने परिवार की संस्कृति के अनुरूप होती है बालक अपने परिवार के सदस्यों से सीखता है। अतः यह कहा जा सकता है कि बालक का व्यक्तित्व उसके अपने परिवार की संस्कृति से प्रभावित होता है इसकें पश्चात इसी संस्कृति के साथ वह विद्यालय में प्रवेश करता है।

प्रस्तुत शोध मे परिवार के वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में संबंधित प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रो. बीना शाह (1990) द्वारा निर्मित गृह पर्यावरण सूची का प्रयोग किया गया है। तथा न्यादर्श चयन हेतु यादृष्चिक विधि का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्श में यह पाया गया कि प्रतिकूलित वातावरण में रहने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अनुकूलित वातावरण में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च होता है।

प्रस्तावना–

परिवार एवं घर बालक की प्रथम पाठशाला है। घर ही वह स्थल है जहॉ बालक के विकास की नींव रखी जाती है। परिवार ही बालकों के लिए विद्यालय शिक्षा की व्यवस्था करता है। घर व परिवार शिक्षा का प्रमुख औपचारिक व अनौपचारिक अभिकरण है। माताएॅ बालक की प्रथम गुरू होती हे। तथा परिवार में दी जाने वाली शिक्षा अनौपचारिक प्रभावशाली तथा स्वाभविक होती है। माता के बाद पिता का महत्वपूर्ण स्थान होता है माता एवं पिता दोनो का बालक के व्यक्तित्व के निर्माण पर प्रभाव पडता है। माता एवं पिता दोनों के आचरण का एवं व्यवहार का बालक पर अत्यधिक प्रभाव पडता है। इसके अलावा परिवार में रहने वाले

प्रत्येक सदस्य जैसे दादा, दादी, चाचा,चाची,बुआ ,बडे भाई ,बहन तथा बालक पर प्रभाव पडता है। इसके अतिरिक्ता पारिवारिक परंपरा एवं संस्कृति से भी बालक प्रभावित होता है। और कुछ बडे होने पर जब वह विद्यालय जाता है तो उसके व्यक्तित्व में उसके परिवार की संस्कृति का प्रभाव होता है। बालक का चरित्र, बोलचाल और रहन सहन अपने परिवार के संस्कृति के अनुरूप होता है।

बाल्यावस्था में ही बालक के समस्त गुणों का विकास प्रारंभ हो जाता है एवं उसके चरित्र में अच्छाई और बुराई दोनों गुणों का समावेष होता है। बालक की प्रांरभिक षिक्षा परिवार में होती है यह शिक्षा बोलचाल रहन सहन शारिरीक स्वच्छता भोजन करना आदि से संबंधित होता है वह अपनी ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करना भी अपने घर परिवार में ही परिवार में ही सीखता है। इसके अतिरिक्त , आलोचना तर्क एकग्रता आदि वह परिवार में ही प्राप्त करता है यही उसकी शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक , संवेगात्मक मनोवैज्ञानिक अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है अतः हम कह सकते है कि बालकों की प्रथम व शाश्वत पाठषाला उसका परिवार व घर है।

संबंधित साहित्य का अध्ययनः–

यावेन्द्र शर्मा (1992) ने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थियों के घर के वातावरण के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के विकास में घनात्मक सह संबंध हैं।
शक्ति टी.आर (2000) ने अपने शोध अध्ययन में यह पाया कि माता पिता एवं बालक के सौहार्द्रपूर्ण संबंध विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव डालते है।
ज्ञानानी (2003) ने अपने शोध अध्ययन के पष्चात यह पाया कि ढॉचाओ की शैक्षिक उपलब्धि पर माता पिता के प्रोत्साहन का छात्रों की अपेक्षा अधि प्रभाव पडता है।

समस्या कथनः–

परिवारिक के वातावरण का विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देष्य :–

परिवार के वातावरण का अध्ययन करना।
छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
परिवारिक वातवरण के संदर्भ में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाः–

H_1 विद्यार्थियों के अनुकुलित पारिवारिक वातावरण पर कोई सार्थक अतंर नही पाया जाएगा।
H_2 विद्यार्थियों के प्रतिकुलित पारिवारिक वातावरण पर कोई सार्थक अतंर नही पाया जाएगा।
H_3 पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक अतंर नही पाया जाएगा।

चर–

स्वतंत्र चर– पारिवारिक वातावरण।

आश्रित चर– शैक्षिक उपलब्धि।

शोध विधि –

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यायदर्ष :–

प्रस्तुत शोध हेतु छत्तीसगढ राज्य के रायपुर जिले के तीन षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का चयन किया गया है तथा अंतिम प्रतिदर्श चयन के विभिन्न यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। एवं कक्षा नवमीं एवं दसवीं के 100 विद्यार्थियों को न्यायदर्ष के रूप मे चयनित किया गया।

उपकरण :–

प्रयुक्त शोध अध्ययन मे प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रो. बीना शाह (1990) द्वारा निर्मित गृह पर्यावरण सूची का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय विष्लेषणः–

विद्यार्थियों के अनुकुलित एवंप्रतिकुलित पारिवारिक वातावरण पर कोई सार्थक अतंर नही पाया जाएगा।

उपरोक्त तथ्य के अध्ययन हेतु परिवारिक वातावरण का मध्यमान व मानक विचलन ज्ञात किया जिसे तालिका क्रमांक 1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्र. 1

परिवारिक वातावरण सूची प्राप्तांक मध्यमान के आधार पर विद्यार्थियों के मध्यमान।

परिवारिक वातावरण	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
अनुकुलित वातावरण	54	120.29	10.08
प्रतिकुलित वातावरण	46	106.82	66.69

उपरोक्त तालिका का गहनतापूर्वक अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की अनुकुलित एवं प्रतिकुलित परिवारिक वातावरण का अध्ययन के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है। मानक विचलन से भी यह स्पष्ट होता

है कि प्रतिकुलित परिवारिक वातावरण की अपेक्षा अनुकूलित पारिवारिक वातावरण से अधिक विचलनशीलता पायी गयी है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन

उपरोक्त तथ्य के अध्ययन हेतु अनुकुलित तथा प्रतिकुलित पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के उच्च मध्यम व निम्न श्रेणी में विभक्त किया गया एवं विद्याथियों की संख्या के आधार पर प्रत्येक श्रेणी में उपस्थित विद्यार्थियों की प्रतिषत संख्या ज्ञात किया जिसे तालिका क्र. 2 में पस्तुत किया गया है।

तालिका क्र. 2

अनुकुलित व प्रतिकुलित पारिवारिक वातावरण की विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का प्रतिशत

परिवारिक वातावरण	उच्च शैक्षिक उप.		मध्यम शैक्षिक उप.		निम्न शैक्षिक उप.	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
अनुकुलित	18	33.33	32	59.25	4	7.40
प्रतिकुलित	12	26.08	24	52.17	10	21.73

तलिका क्र. 2 का अवलोकन करने पर विदित होता है कि प्रतिकूलित पारिवारिक वातावरण की अपेक्षा अनुकूलित पारिवारीक वातावरण में उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक है। तथा प्रतिदर्श विरतण में सबसे अधिक विद्यार्थियों की संख्या के मध्यम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने वाली है। अनुकूलित पारिवारिक वातावरण में प्रतिकुलित पारिवारिक वातावरण की अपेक्षा अधिक मध्यम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थी है लेकिन विद्यार्थीयों की प्रतिषत संख्या के आधार पर अनुकुलित पारिवारिक वातावरण की अपेक्षा प्रतिकुलित पारिवारिक वातावरण का थोडा ही अधिक है इसी प्रकार निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने वाली प्रतिकुलित पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों की प्रतिषत अधिक है।

परिवारिक वातावरण के संदर्भ मे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन –

उपरोक्त तथ्य के अध्ययन हेतु अनुकुलित तथा प्रतिकुलित पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन तथा ही मुल्य ज्ञात किया गया।

तालिका क्र. 3

पारिवारिक वातावरण के संदर्भ मे छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि मानक विचलन तथा टी मान

पारिवारिक वातावरण	कुल संख्या	शैक्षिक उप.		टी मान	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन		

अनुकुलित	54	354	56.44	2.14	< .05
प्रतिकुलित	46	308	58.46		

तलिका क्रमांक 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अनुकूलित परिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको के मध्यमान से अधिक है। इसका अनुमानित कारण हो सकता है कि अनुकूलित परिवारिक वातावरण की विद्यार्थियों को अधिक स्वतंत्रता का पोषण मिलता है।

तलिका के पुनरावलोकन से स्पष्ट होता है कि अनुकूलित परिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का टी मान सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि अनुकूलित पारिवारिक वातावरण की विद्यार्थियों के माता पिता का व्यवहार विद्यार्थियों के प्रति अधिक आत्मीय संवेंदनशील, प्रोत्साही, प्रेरणादायक, स्वीकारात्मक है। जिसका उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

निष्कर्ष– उपरोक्त विष्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्रतिकुलित पारिवारिक वातावरण में रहने वाली छात्राओं की अपेक्षा अनुकूलित पारिवारिक वातावरण में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च होता है क्योंकि अनुकूलित पारिवारिक वातावरण में छात्राओं को षिक्षा के क्षेत्र में समय–समय पर प्रोत्साहन शैक्षिक सुविधाएं मार्गदर्षन माता–पिता द्वारा प्रदत्त अनुभव आदि उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते है।

<u>सन्दर्भित सूची –</u>

शर्मा, यावेन्द्र (1999), विद्यार्थियों के गृह पर्यावरण के मूल्यों तथा व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन , एम. एड. डिजर्टेशन आर बी एस आगरा

कपिल एच के (1981), अनुसंधान विधियां , विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा मैक्ग्युगन, एफ जे (1969), ए सांख्यिकीय के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

मैक्ग्युन, एफ जे (1969), एक्सपेरिमेन्टल साइकॉलोजी, प्रिन्टींस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

पाठक, पी के (2003), अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन, रजत पब्लिकेशन, नई दिल्ली

राय, पारसनाथ, (1988) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा

रेड्डी, नारायण, (2003), मेनेजिंग चाईल्ड प्रोब्लम सपोर्ट स्ट्रेटटीज इवेन्ट्रिज , कनिष्का पब्लिकेशन डिस्ट्रीब्युटर्स , नई दिल्ली ।

"माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत नियमित शिक्षकों एवं शिक्षाकर्मियों की शिक्षण प्रभाव शीलता का तुलनात्मक अध्ययन "

डॉ. संगीता शराफ, डॉ. प्रज्ञा झा, चंकी राज वर्मा, श्वेता सारथी,
(सहायक प्राध्यापक),

डॉ. जया सिंह,(एसोसिएट प्रोफेसर)

मैटस विश्वविद्यालय (स्कुल ऑफ एजूकेशन),

गुल्लू आंरग रायपुर (छ.ग.)

सारांष

एक बालक किसी भी राष्ट्र की रीढ है। आज का बालक कल का नागरिक है तथा भावी राष्ट्र का निर्माता है। अतः राष्ट्र के भावी निर्माता को शारीरिक,मानसिक,सामाजिक तथा आध्यात्मिक सभी दृष्टिकोणों से परिपक्व केवल शिक्षा के माध्यम से ही बनाया जा सकता है।

भारत की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्रारंभिक शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रारंभिक शिक्षा ही आगे की षिक्षा का आधार है । प्राथमिक शिक्षा को सर्वसुलभ एवं अनिवार्य बनाने हेतु शासन द्वारा विभिन्न योजनाओं व अभियानों को लागू किया जाता हे, जिससे 7–14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जा सकें तथा अप्रवेशी एवं शाला त्यागी बच्चों को शिक्षा की धारा से जोडा जा सके।

ऐसी स्थिती में स्कूलों में छात्रों की संख्या में वृद्धि करने , शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने हेतु शासन द्वारा सर्वशिक्षा अभियान को आरंभ किया है जिसके अंतर्गत प्राथमिक स्तर के सभी छात्रों को अनिवार्य एवं निःषुल्क शिक्षा का प्रावधान है।

सर्वशिक्षा अभियान द्वारा चलाये जाने वाले कार्यक्रम छात्रों की संख्या में वृद्धि करना तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना तभी संभव हो सकता है जब शिक्षक प्रभावशाली हो। जब शिक्षक छात्रों की रूचि, क्षमता योग्यता के अनुसार शिक्षण का कार्य करेगें तभी विद्यार्थी उसके द्वारा प्रदान किये जाने वाले ज्ञान को ग्रहण कर सकेंगे। शिक्षक के प्रभावशाली होने के लिये यह आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षण कौशल को विकसित करे, विभिन्न शिक्षण तकनीकी में सुधार करे। ऐसे शिक्षक कजो सिखने में कौशल को विकसीत नहीं कर सकतेफ। वे अपने विषय को प्रभावशाली नहीं बना सकतें। प्रभावशाली षिक्षण करने वाले शिक्षक का मुख्य कार्य

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM